साप्ताहिक
Live not just breaTHE

MPHIN/2015/63220
MP/IDC1528/22-23

दि कार्मिक पोस्ट

Global School Of Excellence, Obedullaganj

वर्ष : 9, अंक : 27 (प्रति बुधवार),इन्दौर, 21 फरवरी 2024 से 27 फरवरी 2024 पेज :8 कीमत : 3 रुपये

पर्यावरण संरक्षण राज्य शासन की प्राथमिकता- मुख्यमंत्री डॉ यादव

भोपाल)मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि पृथ्वी को बचाने के उद्देश्य से पर्यावरण संरक्षण गतिविधियां राज्य शासन की प्राथमिकता है। पर्यावरण की रक्षा से संबंधित विशेषज्ञों के प्राप्त सुझावों पर आवश्यक निर्णय लिए जाएंगे। नगरी और ग्रामीण निकायों द्वारा हरीतिमा के विकास के लिए स्थान सुरक्षित किए जाएंगे। इसके साथ ही सौर ऊर्जा को बढ़ावा दिया जाएगा और सिंगल यूज प्लास्टिक के उपयोग पर अंकुश लगाया जाएगा। मुख्यमंत्री डॉ यादव रविन्द्र सभागम में पर्यावरण सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भारत की संस्कृति प्रकृति से जुड़ी है। हमारी जीवन शैली पेड़ पौधों और वनों के सम्मान का आव्हान करती है। हम वसुधा को परिवार मानते हैं। प्राचीन साहित्य की रचना भोज पत्रों पर हुई। आम के पत्तों से हम मंगल द्वार सजाते हैं। जिस देश को परमात्मा ने प्रकृति से जोड़ा है, वह देश विश्व को भी नया संदेश दे रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत का यश विश्व में बढ़ रहा है। श्री मोदी ने यह उदाहरण स्थापित किया कि जहां दुनिया के कई देश ताकत के बल पर सत्ता के विस्तार में लगे हैं, वहीं भारत शांति का संदेश विश्व को दे रहा है। कोविड के समय अन्य राष्ट्रों को औषधियां बांटने और पर्यावरण क्षेत्र में सभी के सहयोग से अच्छे परिणाम लाने का संकल्प प्रधानमंत्री श्री मोदी जी की नेतृत्व क्षमता का परिचायक है।मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि राजनीति के क्षेत्र में होने के बाद भी शिवराज जी पर्यावरण संरक्षण के महत्वपूर्ण अभियान से जुड़े हैं। वे हमारे आदर्श हैं। उनके द्वारा गत तीन वर्ष से प्रतिदिन पौधा लगाने का कार्य प्रेरक है।उन्होंने विभिन्न समाजों, बच्चों और बुजुर्गों सभी को पौध रोपण से जोड़ा है। डॉ. यादव ने कहा कि प्रतिदिन एक पेड़ लगाने के कार्य से शिवराज जी ने अनेकों को जोड़ा ,यह हमारे लिए प्रेरणा की बात है। नागरिक अपनी जन्म वर्षगांठ या अन्य अवसर पर पेड़ लगाना चाहें तो उन्हें वृक्ष बैंक के माध्यम से पौधे उपलब्ध करवाए जाएंगे । सौर ऊर्जा को बढ़ावा देते हुए सोलर पैनल की स्थापना के लिए नागरिकों को पूरा सहयोग मिलेगा। प्रदेश में सांची सोलर सिटी की पहचान बनी है। इस कार्य का विस्तार अन्य नगरों एवं ग्रामों में होगा।

श्री शिवराज सिंह चौहान ने नागरिकों को दिलवाया संकल्प, रोज एक पेड़ लगाएंगे पूर्व मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि आज यहां नागरिकों ने वर्ष में कम से कम एक पेड़ लगाने, प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा वर्ष 2070 तक नेट जीरो का लक्ष्य प्राप्त करने में सहयोग, घरों में सोलर पैनल की स्थापना, सिंगल यूज प्लास्टिक का उपयोग न करने और बेटा-बेटी से समान व्यवहार करने का संकल्प लिया है। प्रत्येक नगर और ग्राम में पर्यावरण के प्रति सजग नागरिकों की एक टीम तैयार कर सरकार और समाज के संयुक्त प्रयासों में सहयोग का संकल्प भी लिया गया है। धरती को सुरक्षित रखने के लिए ऐसे प्रयास आवश्यक हैं। श्री चौहान ने कहा कि उन्हें विश्वास है कि मुख्यमंत्री डॉ. यादव के नेतृत्व में मध्यप्रदेश प्रगति पथ पर आगे बढ़ेगा। श्री चौहान ने पर्यावरण में आए विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधियों का आभार भी व्यक्त किया।

पर्यावरण विशेषज्ञों के संबोधन आमंत्रित पर्यावरणविद् पद्मभूषण डॉ. अनिल जोशी ने कहा कि आज विकसित देश अनेक कष्टों से गुजर रहे हैं। प्रकृति के प्रति सभी को गंभीर होना चाहिए। मध्यप्रदेश में आर्थिक विकास की तरह प्रकृति के संरक्षण के लिए किए जा रहे कार्यों का लेखा-जोखा रखा जा रहा है, जो अनुकरणीय है। प्रख्यात गीतकार श्री समीर अंजान ने कहा कि उन्होंने सर्वाधिक गीत लिखने के कीर्तिमान बनाने के बाद अब यह संकल्प लिया है कि पर्यावरण पर केंद्रित गीत भी लिखेंगे। अर्जित आय का दस प्रतिशत हार्ट-फुलनेस जैसी संस्थाओं को देने का संकल्प भी लिया है। प्रख्यात पर्यावरण विद् श्री दाजी ने कहा कि भारतीय जीवन परम्परा में प्रकृति के सम्मान और संरक्षण की दृष्टि से महत्वपूर्ण आदतें शामिल हैं। इनमें तुलसी या अन्य पौधे को सूर्यास्त के पश्चात न तोड़ने, पीपल और अन्य वृक्षों की पूजा भी शामिल है। जो फल हमें बेहतरीन स्वाद देते हैं, उन पेड़ों मनुष्य कुछ नहीं देता। पर्यावरण सम्मेलन में सनातन परिवार, गायत्री परिवार, माँ आशापुरा दरबार जैसी संस्थाओं का सहयोग सराहनीय है। उप मुख्यमंत्री श्री राजेंद्र शुक्ला ने कहा कि आज ग्लेशियर पिघल रहे हैं। यह विश्व के राष्ट्रों के लिए एक चेतावनी है। इसलिए आवश्यक है कि अधिक से अधिक पेड़ लगाए जाएं जिससे पर्याप्त प्राण वायु मिलती रहे। कार्यक्रम में परिवहन एवं स्कूल शिक्षा मंत्री श्री उदय प्रताप सिंह, खाद्य नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता मंत्री श्री गोविंद सिंह राजपूत, भोपाल की महापौर श्रीमती मालती राय, सांसद श्री रमाकांत भार्गव, पूर्व सांसद श्री आलोक संजर, श्री सुमित पचौरी एवं अन्य जनप्रतिनिधि, हार्ट-फुलनेस संस्था और अन्य सामाजिक संस्थाओं के सदस्य, पदाधिकारी और पर्यावरण प्रेमी, नागरिक उपस्थित थे।

कार्यक्रम में ब्रह्मकुमारी दीदियों ने मुख्यमंत्री डॉ. यादव, पूर्व मुख्यमंत्री श्री चौहान और अन्य अतिथियों का अभिनन्दन किया है। रामचंद्र मिशन की ओर प्रकाशित श्री दाजी की पर्यावरण संबंधी पुस्तक का विमोचन मुख्यमंत्री डॉ. यादव और पर्यावरण विद् श्री जोशी ने किया। कार्यक्रम के अंत में अतिथियों एवं सभी उपस्थितों द्वारा आचार्य विद्यासागर जी के देवलोक गमन पर दो मिनट का मौन धारण कर श्रद्धांजलि दी गई।

कॉफी को जलवायु अनुकूल बना सकती हैं नई किस्में, उत्पादन भी बढ़ेगा

न्यूयार्क। एक अध्ययन के मुताबिक, अरेबिका नामक कॉफी का पौधा, कॉफिया अरेबिका का एक नया आनुवंशिक मानचित्र है। यह नया आनुवंशिक मानचित्र कॉफी उगाने वालों को इसे अधिक जलवायु अनुकूल बनाने में मदद कर सकता है।

कॉफी धरती पर दूसरा सबसे अधिक पिया जाने वाला पेय है, जिसका हर दिन दो अरब से अधिक कप से अधिक का आनंद लिया जाता है। यह भी एक मूल्यवान पेय पदार्थ है और 2023 में दुनिया भर के बाजार में इसका मूल्य 93 बिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक था। अपने बेहतर स्वाद और कई बेहतरीन किस्मों के साथ, अरेबिका कॉफी बीन्स वैश्विक कॉफी उत्पादन का लगभग 60 से 70 फीसदी हिस्सा हैं। कॉफी की खेती सीधे तौर पर 2.5 करोड़ किसान परिवारों को आजीविका प्रदान करती है और अन्य 10 करोड़ लोग कॉफी प्रसंस्करण और खुदरा बिक्री में शामिल हैं। लेकिन दुनिया के कई हिस्सों में जलवायु परिवर्तन से कॉफी की फसलों को भी खतरा है और हमें फसलों को नई परिस्थितियों के अनुकूल बनाने में मदद करने के लिए प्रजनन का उपयोग करने के साथ-साथ उन क्षेत्रों में उगाने की जरूरत है जो सूखे जैसे कारणों के प्रति कम संवेदनशील हैं।

नेचर कम्युनिकेशंस में प्रकाशित यह अध्ययन उच्च पैदावार और जलवायु परिवर्तन के प्रति ढलने वाली कॉफी किस्मों का उत्पादन करने में मदद कर सकता है। कॉफी की फसल के लिए ये नई जानकारी इससे अधिक अहम समय पर नहीं आ सकती थी।

कॉफी आनुवंशिकी का रहस्य- वैज्ञानिकों के एक अंतरराष्ट्रीय टीम द्वारा किए गए ऐतिहासिक अध्ययन ने आश्चर्यजनक आनुवंशिक कारणों को उजागर किया है जो दुनिया भर में उगाई जाने वाली सैकड़ों अरेबिका कॉफी किस्मों की विविधता को उजागर करते हैं। इटली के उडीन विश्वविद्यालय की एक टीम के नेतृत्व में नया अध्ययन, कॉफी और आलू, ब्रैसिका और गेहूं समेत अन्य महत्वपूर्ण फसलों के आनुवंशिकी के बीच अहम समानताएं भी उजागर करता है। इन फसलों को टेट्राप्लोइड्स के रूप में जाना जाता है क्योंकि इनमें मनुष्यों और लगभग सभी अन्य जानवरों में पाई जाने वाली दो प्रतियों के बजाय प्रत्येक जीन की चार प्रतियां होती हैं। अरेबिका जीनोम में गुणसूत्रों के ग्यारह समूह होते हैं, जिनमें से प्रत्येक में उसके प्रत्येक संबंधित माता-पिता की दो प्रतियां होती हैं, नीले रंग में कॉफी कैनेफोरा और हरे रंग में कॉफी यूजेनियोइड्स, कुछ मामलों में नीले और हरे गुणसूत्र खंड के हिस्से मिश्रित हो गए हैं।

गेहूं या आलू जैसी खाद्य फसलों के विपरीत, जिनकी सूखा सहन करने या कीट-प्रतिरोधी किस्मों को बनाने के लिए दशकों या सदियों से अत्यधिक प्रजनन किया गया है, कॉफी आधुनिक प्रजनन विधियों के प्रयोग में पिछड़ गई है।इसमें अधिक सटीक डीएनए-आधारित तकनीकों का उपयोग शामिल है जैसे कि जीनोम एडिटिंग जिसमें डीएनए में परिवर्तन करना शामिल है। ये विधियां, जिनका उपयोग चिकित्सा में भी किया जाता है, हमें प्रदर्शन के कई पहलुओं को बेहतर बनाने के लिए फसल के जीनोम या आनुवंशिक कोड के हिस्सों की पहचान करने और सटीक रूप से बदलाव करने में सक्षम बनाती हैं।कॉफी की आनुवंशिक संरचना के बारे में अधिक विस्तृत जानकारी के साथ, शोधकर्ता कॉफी की किस्मों को बेहतर बनाने के

लिए इन तरीकों का उपयोग करना शुरू कर सकते हैं। अरेबिका कॉफी के साथ एक समस्या यह है कि हमारी वर्तमान किस्में बहुत विविध नहीं हैं। हालांकि, कॉफी की कई जंगली प्रजातियां हैं जो अत्यधिक विविध हैं और एक लक्ष्य जंगली और खेती की प्रजातियों के बीच अधिक जलवायु के अनुकूल संकर उत्पन्न करना है। इससे प्रजनकों को कॉफी की व्यापक किस्मों का उत्पादन करने में सफलता मिलेगी जो दुनिया के कई अलग-अलग क्षेत्रों में पनप सकती हैं। साल 2022 में, एक स्विस अध्ययन से पता चला कि अरेबिका कॉफी की फसलें जलवायु परिवर्तन से भारी खतरों का सामना कर रही हैं जो ब्राजील और इथियोपिया जैसे प्रमुख उत्पादक क्षेत्रों को गंभीर रूप से प्रभावित कर सकती हैं। सूखे की बढ़ती घटनाओं और नए कीटों या बीमारियों के खतरे के कारण इन क्षेत्रों के कुछ हिस्से कॉफी की खेती के लिए अनुपयुक्त हो सकते हैं। प्रजनक पहले से ही अन्य सूखा सहन करने वाली फसलों को विकसित करने के लिए उन्नत तरीकों को अपना रहे हैं। भविष्य में, इन्हें कॉफी पर लागू किया जा सकता है।

पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने पर तीन प्रोजेक्टों को नोटिस

चंबा। जिले में पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने वाले बिजली प्रोजेक्टों पर प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड ने शिकंजा कसना शुरू कर दिया है।

ऐसे तीन पावर हाइड्रो प्रोजेक्ट को भी बोर्ड ने नोटिस जारी किए हैं। प्रोजेक्ट के निर्माण के दौरान निकलने वाली मिट्टी डंपिंग साइट में फेंकने के बजाय खुले में फेंकी जा रही थी। कई प्रोजेक्ट मिट्टी को नदी-नालों में ठिकाने लगा रहे थे। इससे पर्यावरण को नुकसान हो रहा था। इसकी भनक लगते ही प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की टीम ने जिले में प्रगतिशील सभी पावर प्रोजेक्टों का औचक निरीक्षण किया। इस दौरान तीन पावर प्रोजेक्ट ऐसे पाए गए, जो नियमानुसार मिट्टी को डंपिंग साइट में नहीं फेंक रहे थे। इसके लिए पावर प्रोजेक्ट को बोर्ड ने नोटिस जारी किया है। 15 दिन के भीतर प्रोजेक्ट संचालकों को नोटिस का जवाब देने को कहा है। इसमें उन्हें इस बात के प्रमाण देने होंगे कि जिस कार्य के लिए उन्हें नोटिस दिया गया है उसमें उन्होंने सुधार कर लिया है। जवाब आने के बाद बोर्ड की टीम दोबारा प्रोजेक्टों का निरीक्षण करेगी।

भरमौर और चुराह में मौजूदा समय में पावर प्रोजेक्टों के निर्माण कार्य चल रहे हैं। इन प्रोजेक्टों में नियमों के अनुसार कार्य करने को लेकर जहां बोर्ड ने पहले ही हिदायत दे रखी है तो कुछ समय पहले स्थानीय लोगों ने प्रोजेक्ट निर्माण कार्य से निकलने वाली मिट्टी को अव्यवस्थित तरीके से ठिकाने लगाने के फोटो भी सोशल मीडिया पर वायरल किए थे। इसके बाद बोर्ड ने सभी प्रोजेक्टों पर शिकंजा कसने के लिए औचक निरीक्षण किए। तीन पावर प्रोजेक्टों को पर्यावरण को नुकसान पहुंचाते हुए भी पाया। इसके लिए उन्हें नोटिस जारी किए गए हैं। --प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के सहायक अभियंता राहुल शर्मा ने बताया कि तीन पावर प्रोजेक्टों को नोटिस दिए गए हैं। इन प्रोजेक्टों में निर्माण कार्यों से निकलने वाली मिट्टी डंपिंग साइट में नहीं फेंकी जा रही थी। नोटिस का जवाब मिलने पर प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की टीम दोबारा प्रोजेक्टों का मुआयना करेगी।

जलवायु में बदलाव के कारण अनियमित मौसम से बढ़ेगा टिड्डियों का प्रकोप

नई दिल्ली। अध्ययन के मुताबिक, 1985 के बाद से टिड्डियों के निवास स्थान का विस्तार हुआ है, 21वीं सदी के अंत तक पश्चिम भारत और पश्चिम मध्य एशिया में कम से कम पांच फीसदी की वृद्धि हो सकती है संयुक्त राष्ट्र के खाद्य और कृषि संगठन ने टिड्डियों को दुनिया में सबसे विनाशकारी प्रवासी कीट के रूप में वर्णित किया है। एक नए अध्ययन में पाया गया है कि मौसम में बदलाव जैसे - तेज हवा और अत्यधिक बारिश के कारण रेगिस्तानी टिड्डियों के प्रकोप का खतरा बढ़ सकता है। मानवजनित जलवायु परिवर्तन के कारण मौसम के पैटर्न में बदलाव आ सकता है जिसके कारण टिड्डियों का प्रकोप बदतर होने की आशंका है।

रेगिस्तानी टिड्डी - उत्तरी और पूर्वी अफ्रीका, मध्य पूर्व और दक्षिण एशिया के कुछ शुष्क क्षेत्रों में पाई जाने वाली एक छोटी सींग वाली प्रजाति,एक प्रवासी कीट है। ये लाखों के झुंड में लंबी दूरी तक यात्रा करती हैं और फसलों को नुकसान पहुंचाती है, जिससे अकाल और खाद्य असुरक्षा होती है।

अध्ययन के मुताबिक, एक वर्ग किलोमीटर के झुंड में आठ करोड़ टिड्डियां शामिल होती हैं जो एक दिन में 35,000 लोगों को खिलाने के लिए पर्याप्त फसल खा सकती हैं। संयुक्त राष्ट्र के खाद्य और कृषि संगठन ने इसे दुनिया में सबसे विनाशकारी प्रवासी कीट के रूप में वर्णित किया है।

साइंस एडवांसेज नामक पत्रिका में प्रकाशित अध्ययन में कहा गया है कि गर्म होती जलवायु में टिड्डियों के इन प्रकोपों को रोकना और नियंत्रित करना बहुत कठिन होगा।

अध्ययनकर्ता और नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ सिंगापुर में सहायक प्रोफेसर जियाओगांग हे ने कहा कि जलवायु परिवर्तन के कारण अधिक लगातार और गंभीर चरम मौसम की घटनाएं टिड्डियों के प्रकोप में अप्रत्याशितता बढ़ोतरी कर सकती हैं।

प्रोफेसर जियाओगांग हे ने आशा जताई है कि अध्ययन से देशों को टिड्डियों की गतिविधि पर जलवायु में बदलाव के प्रभावों को समझने और इनसे निपटने में मदद मिल सकती है। जिससे कृषि उत्पादकता और खाद्य सुरक्षा पर इसके प्रभावों को कम किया जा सकता है। उन्होंने प्रतिक्रिया देने के लिए देशों और नियंत्रण करने वाले संगठनों के बीच बेहतर क्षेत्रीय और महाद्वीपीय सहयोग का आग्रह किया है, ताकि जल्दी से पूर्व चेतावनी प्रणाली का निर्माण किया जा सके। अफ्रीका और मध्य पूर्व में टिड्डियों के प्रकोप के खतरे और जलवायु परिवर्तन से संबंध का आकलन करने के लिए, वैज्ञानिकों ने खाद्य और कृषि संगठन के लोकस्ट हब डेटा टूल का उपयोग करके 1985 से 2020 तक रेगिस्तानी टिड्डियों के प्रकोप की घटनाओं का विश्लेषण किया। उन्होंने कीड़ों के पैटर्न की जांच करने के लिए आंकड़े आधारित ढांचे का निर्माण और उपयोग किया ताकि यह पता लगाया जा सके कि लंबी दूरी तक फैलने के पीछे क्या कारण हो सकते हैं। अध्ययनकर्ताओं ने पाया कि केन्या, मोरक्को, नाइजर, यमन और पाकिस्तान सहित अधिकांश देशों में टिड्डियों का प्रकोप रहा। 25 वर्षों में रेगिस्तानी टिड्डियों का सबसे बुरा प्रकोप 2019 और 2020 में पूर्वी अफ्रीका में हुआ, जब कीड़ों ने सैकड़ों हजारों एकड़ खेतों को तबाह कर दिया और फसलों, पेड़ों और अन्य वनस्पतियों को नुकसान पहुंचाया, जिससे खाद्य सुरक्षा और आजीविका प्रभावित हुई। इंटरनेशनल सेंटर ऑफ इंसेक्ट फिजियोलॉजी एंड इकोलॉजी के वैज्ञानिक एलफतिह अब्देल-रहमान ने कहा कि जलवायु परिवर्तन के कारण बड़े पैमाने पर रेगिस्तानी टिड्डियों के प्रकोप से खाद्य उत्पादन में कमी और भोजन की कीमतों में वृद्धि के कारण प्रभावित क्षेत्रों में आजीविका को काफी खतरा होगा।

शासकीय महिला पॉलीटेक्निक महाविद्यालय में एक दिवसीय इन्क्युबेशन क्लब बूट केम्प का आयोजन

इंदौर इंदौर के शासकीय महिला पॉलिटेक्निक महाविद्यालय एवं श्री गोविंदराम सेकसेरिया इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड साइंस के संयुक्त तत्वावधान में 19 फ़रवरी 2024 को इन्क्युबेशन क्लब के अंतर्गत एक दिवसीय बूट कैंप का आयोजन किया गया। तनय मुखर्जी सीईओ जीटा इनोवेशन लैब एवं संस्था प्राचार्य श्रीमती विजया शिन्दे द्वारा दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया।

शासकीय महिला पॉलीटेक्निक महाविद्यालय की प्राचार्य श्रीमती विजया शिन्दे द्वारा संस्था का परिचय देते हुए संस्था में संचालित किये जाने वाले इन्क्युबेशन सेंटर की विस्तृत जानकारी दी। बूट कैंप के मुख्य वक्ता श्री तनय मुखर्जी द्वारा Role of Startup in Innovation विषय पर उद्बोधन दिया गया। उद्यमिता के विभिन्न चरणों Discovery, Invention & Innovation की व्याख्या जीवंत उदाहरणों द्वारा की गई। द्वितीय सत्र में श्रीमती सुरभि शाह द्वारा एक सफल उद्यमी के रूप में अपनी यात्रा से छात्राओं को अवगत कराया। तृतीय सत्र में श्रीमती गर्जना राठौर द्वारा फायनेंशियल मॉडल को समझाते हुए सरकार द्वारा इन्क्युबेशन सेंटर एवं र्स्टाटअप हेतु संचालित विभिन्न शासकीय योजनाओं पर व्याख्यान दिया। मुदित ठाकुर फाउन्डर एवं सीईओ योगोवेटर द्वारा Business Model Canvas °ß´ Startup Support Ecosystem द्वारा छात्राओं को समझाया गया की किस प्रकार स्टार्टअप प्लान को बिजनेस प्लान में परिवर्तित किया जा सकता है। अंतिम सत्र में एस जी एस आय टी एस की इन्क्युबेशन सेंटर सदस्य अनुपना मोदी द्वारा Entrepreneurship Ecosystem Catalyst विषय पर चर्चा की।

बुरहानपुर को ''बनाना हब'' बनाने के लिये बनेगी कार्ययोजना

केला निर्यात की बढेंगी संभावनाएं - मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने दी बधाई एवं शुभकामनायें

इंदौर इंदौर संभाग के बुरहानपुर जिले में केला उत्पादन और प्रसंस्करण की अपार संभावनाओं को देखते हुए जिले को ''बनाना हब'' बनाने के लिये कार्ययोजना बनाई जायेगी। आज बुरहानपुर में अनूठे बनाना फेस्टिवल-2024 का शुभारंभ हुआ। इसमें बड़ी संख्या में विषय-विशेषज्ञों, निर्यातकों एवं केला उत्पादक किसानों एवं विभिन्न संस्थाओं के प्रमुखों ने भाग लिया।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने प्रतिभागियों को दिये अपने संदेश में कहा कि बनाना फेस्टीवल के आयोजन से केले से निर्मित विभिन्न उत्पादों की मार्केटिंग, पैकेजिंग और प्रोसेसिंग की प्रक्रियाओं से आमजन को अवगत करवाने से लेकर इस उत्पाद की निर्यात वृद्धि की संभावनाएं बनेंगी। मुख्यमंत्री ने उत्सव में विविध गतिविधियों की सराहना करते हुए शुभकामनायें प्रेषित की। उद्यानिकी और खाद्य प्रसंस्करण मंत्री श्री नारायण सिंह कुशवाह ने बनाना फेस्टिवल- 2024 की सराहना करते हुए बुरहानपुर जिले के लिए संदेश दिया है। उन्होंने कहा कि इससे समृद्धि एवं विकास के अवसर बढ़ेगे।

बुरहानपुर जिले ने राष्ट्रीय स्तर पर नया कीर्तिमान रचा- सांसद श्री ज्ञानेश्वर पाटील ने कहा कि ''एक जिला-एक उत्पाद'' में बुरहानपुर जिले ने राष्ट्रीय स्तर पर नया कीर्तिमान रचा है। महिला सशक्तिकरण की दिशा में भी यह योजना रोजगार के नये अवसर देकर आर्थिक रुप से इस व्यवसाय से जुडी महिलाओं को सशक्त बना रही है। लोकल फॉर वोकल के तहत ''एक जिला-एक उत्पाद योजना की शुरूआत से आत्मनिर्भर भारत के विजन को साकार करने की दिशा में अनेक कदम बढाए हैं। बुरहानपुर जिले में लगभग 16 लाख मीट्रिक टन केला का उत्पादन हो रहा है। उन्होंने कहा कि एक जिला एक उत्पाद में जिले ने स्पेशल मेंशन अवॉर्ड-2023 में प्रथम राष्ट्रीय पुरस्कार हासिल कर बुरहानपुर जिले का नाम रोशन किया है।

बुरहानपुर विधायक श्रीमती अर्चना चिटनीस ने कहा कि एक जिला-एक उत्पाद का उद्देश्य स्थानीय उत्पादों के माध्यम से प्रत्येक क्षेत्र की अर्थव्यवस्था को मजबूत करना है। जिले में केले के बाद सर्वाधिक उत्पादन वाली फसल हल्दी है। केले और हल्दी दोनों ही फसलों की प्रसंस्करण और मूल्य संवर्धन की गतिविधियों से इन्हें उगाने वाले किसानों की आय में और वृद्धि होने की अपार संभावनाएं है। नेपानगर विधायक सुश्री मंजू दादू ने कहा कि प्रसंस्करण और मूल्य संवर्धन के लिए निजी निवेश आमंत्रित करके स्थानीय लोगों को रोजगार और स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूत किया जा सकता है। इसके लिए केले के फाइबर से टेक्सटॉइल व अन्य वस्तुओं के निर्माण की गतिविधियों का उत्पादन वाणिज्यिक स्तर पर करने की आवश्यकता है। कलेक्टर बुरहानपुर सुश्री भव्या मित्तल ने कहा कि बनाना फेस्टिवल का मुख्य उद्देश्य एक जिला-एक उत्पाद अंतर्गत केले से निर्मित विभिन्न उत्पाद, उनकी मार्केटिंग, पैकेजिंग, प्रोसेसिंग जैसे अन्य प्रक्रियाओं से अवगत कराना है। बनाना फेस्टिवल में केले एवं हल्दी के प्रसंस्करण में तकनीक, अन्वेषण एवं ब्रिक्री पर जोर देना है। भविष्य की संभावनाओं को देखते हुए, केले के रेशे से हस्त शिल्प उत्पाद, केला का रेशा-कपड़ा एवं विविध खाद्य उत्पादों के लिए प्रेरित किया जा रहा है। सांसद श्री पाटील, विधायक श्रीमति चिटनीस, विधायक सुश्री दादू एवं कलेक्टर सुश्री मित्तल सहित अतिथियों ने बनाना फेस्टिवल में आयोजित केले के विभिन्न हस्त शिल्प उत्पादों की प्रदर्शनी का अवलोकन किया तथा सराहना भी की। वहीं केले से बने व्यंजन को चखकर प्रसन्नता व्यक्त की। प्रदर्शनी का शुभारंभ फीता काटकर किया गया।

छोटी जल आपूर्ति सुविधाओं में सुधार के लिए डब्ल्यूएचओ ने जारी किए नए दिशानिर्देश

मुंबई। दुनिया में 220 करोड़ लोगों को आज भी साफ और सुरक्षित पेयजल नसीब नहीं हो रहा। इनमें से ज्यादातर वो लोग हैं जो ग्रामीण इलाकों में रहते हैं और अक्सर अपनी पेयजल संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए छोटी जल आपूर्ति सुविधाओं पर निर्भर रहते हैं। लेकिन समस्या यह है कि यह सुविधाएं अक्सर तकनीकी और संसाधन संबंधी चुनौतियों से जूझती रहती हैं। इसका असर पानी की सप्लाई, गुणवत्ता और विश्वसनीयता पर पड़ता है। पानी की कमी और गुणवत्ता में गिरावट न केवल बीमारियों के जोखिम को बढ़ा सकती हैं। साथ ही इनका सामजिक और आर्थिक रूप से भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

इन चुनौतियों को पार पाने के लिए यह सुनिश्चित करना जरूरी है कि नीतियों और नियमों में छोटी जल आपूर्ति योजनाओं को भी ध्यान में रखा जाए। ऐसे में इन समस्याओं को ध्यान में रखते हुए विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने छोटी जल आपूर्ति योजनाओं को बढ़ावा देने के लिए नए दिशानिर्देश जारी किए हैं। इनका उद्देश्य छोटी जल आपूर्ति सुविधाओं में पानी की गुणवत्ता में सुधार करने के साथ-साथ सुरक्षित और विश्वसनीय जल आपूर्ति सुनिश्चित करना है। इसके साथ ही कमजोर और संसाधन-सीमित समुदायों में दूषित जल के चलते स्वास्थ्य के लिए पैदा हो रहे जोखिमों का समाधान करना है। इसके साथ ही डब्ल्यूएचओ ने एक नया टूल भी जारी किया है। गौरतलब है कि इन समुदायों में अक्सर पीने का साफ पानी न मिलने के कारण हैजा, दस्त, चर्म रोग जैसी संक्रामक बीमारियों के फैलने का खतरा बना रहता है। बता दें कि सतत विकास के लक्ष्य 6.1 के तहत 2030 तक दुनिया के हर हिस्से में हर जन तक स्वच्छ और सुरक्षित पानी पहुंचाने का लक्ष्य रखा गया था। इन दिशानिर्देशों का उद्देश्य भी इन लक्ष्यों को हासिल करने में मदद करना है। इस बारे में विश्व स्वास्थ्य संगठन के पर्यावरण, जलवायु परिवर्तन और स्वास्थ्य विभाग की निदेशक डॉक्टर मारिया नीरा का कहना है कि इन छोटी जल आपूर्ति योजनाओं में निवेश दोहरा लाभ देता है। एक तरफ जहां इससे दूषित पानी से फैलने वाली बीमारियों को रोकने में मदद मिलती है। दूसरी ओर यह बीमारियों और उनके इलाज पर होने वाले खर्च को सीमित करके आर्थिक दबाव को कम करता है।

जलवायु परिवर्तन को लेकर कहीं ज्यादा संवेदनशील हैं छोटी जल आपूर्ति सेवाएं उनके मुताबिक जलवायु में आते बदलावों से इन छोटी जल आपूर्ति सुविधाओं को अधिक खतरा है। विशेष रूप से जल गुणवत्ता और मात्रा को लेकर यह जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के प्रति कहीं ज्यादा संवेदनशील हैं। उनके मुताबिक यह साफ पानी की उपलब्धता को प्रभावित कर सकता है। ऐसे में हर किसी की स्वच्छ और सुरक्षित पेयजल उपलब्ध हो सके यह सुनिश्चित करने के लिए तत्काल प्रयास किए जाने की आवश्यकता है। इन दिशानिर्देशों में स्वच्छ पेयजल के लिए डब्ल्यूएचओ की योजना को आधार के रूप में उपयोग करते हुए छह सुझाव दिए हैं। बता दें कि ये दिशानिर्देश स्वच्छ जल और स्वास्थ्य आवश्यकताओं पर केंद्रित हैं और स्थानीय परिस्थितियों को ध्यान में रखने पर जोर देते हैं। साथ ही यह स्वास्थ्य आवश्यकताओं के आधार पर नियम निर्धारित करने, समस्याओं को रोकने की योजना बनाने और स्वतंत्र रूप से पानी की गुणवत्ता की जांच करने जैसे मुद्दों को कवर करते हैं। गौरतलब है कि ये सुझाव अनेक शोधों और धरातल पर जांचे परखे गए उदाहरणों के साथ-साथ दस महत्वपूर्ण सिद्धांतों पर आधारित हैं। इन सिद्धांतों में सार्वजनिक स्वास्थ्य को सर्वोच्च प्राथमिकता देना, जोखिम-आधारित दृष्टिकोण अपनाना और प्रगतिशील सुधार को लक्षित करना शामिल हैं।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक सोनल मेहता केलिए प्रतीक्षा ग्राफिक्स, 127 देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर(म.प्र.) से मुद्रित एवं 209-बी शहनाई रेसीडेंसी-2 कनाड़िया रोड इंदौर
(म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक: डॉ. सोनल मेहता फोन : 0731-2595008 Mail.sonal12mehta@yahoo.co.in 9755040008